Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हरियाणा के साहित्य में राष्ट्रीयता का भावः एक ऐतिहासिक अध्ययन

अशोक कुमार
शोधार्थी, इतिहास, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर–124021, रोहतक
डॉ. कुमारी सुमन
शोध निर्देशिका, सहायक प्रोफेसर इतिहास, सामाजिक विज्ञान विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय अस्थल बोहर–124021, रोहतक

शोध सारः
हरियाणा के साहित्य में राष्ट्रीयता का भाव अत्यंत सशक्त और स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ के कवियों, लोकगीतकारों और साहित्यकारों ने अपने लेखन को केवल मनोरंजन या सौंदर्याभिव्यक्ति का माध्यम न बनाकर, उसे सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण का साधन बनाया। जब देश अंग्रेजी शासन के अत्याचारों से पीड़ित था, उस समय हरियाणा की लोकसंस्कृति और साहित्य ने जनता को साहस, आत्मबल और संघर्ष की प्रेरणा दी। लोकसाहित्य और लोकगीतों में राष्ट्रप्रेम – हरियाणा का लोकसाहित्य, विशेषकर लोकगीत और रागनियाँ, सीधे–सीधे जनजीवन से जुड़े हुए थे। इन गीतों में खेत–खलिहान, ग्रामीण जीवन, सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ देशभक्ति और स्वतंत्रता की आकांक्षा भी प्रकट होती थी। लोकगीतों के माध्यम से सामान्य जनता तक राष्ट्रीय चेतना का संदेश पहुँचाना सरल हो गया क्योंकि ये गीत सीधे उनकी भाषा और संस्कृति से जुड़े थे।[1] ग्रामीण कवियों व कथाकारों द्वारा त्याग और बलिदान का संदेश – हरियाणा के ग्रामीण कवियों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता के लिए बलिदान और त्याग को सर्वोपरि बताया। उन्होंने यह संदेश दिया कि पराधीनता से मुक्ति केवल साहस और समर्पण से ही संभव है। उनके साहित्य में शौर्य, बलिदान और त्याग के आदर्श इतने गहरे थे कि साधारण किसान और मजदूर भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। भाषाई स्वरूप और राष्ट्रीय चेतना – हरियाणा के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में हरियाणवी, ब्रज और हिंदी भाषा का उपयोग किया। इन भाषाओं की सरलता और सहजता ने साहित्य को सीधे जनता के दिल तक पहुँचा दिया। साहित्यकारों का यह दृष्टिकोण कि जनता की भाषा ही जागरण का सबसे बड़ा साधन है, राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में अत्यंत प्रभावी रहा। कवियों और साहित्यकारों का योगदान – लख्मीचंद जैसे लोककवियों ने अपनी रागनियों में

[1] राकेश गोयल, (2009) *हरियाणा की लोक परंपरा और राष्ट्रीयता,* अंबाला साहित्य संग्रहालय, पृष्ठ 15–28

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सामाजिक सुधार, राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता के संदेशों को प्रमुखता दी। उनके गीतों ने ग्रामीण समाज को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। इसी प्रकार अन्य स्थानीय कवियों ने भी अपने गीतों और कवित्तों में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठाई और जनता में विद्रोह की भावना जगाई। हरियाणा के साहित्य में राष्ट्रीयता का भाव केवल स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें सामाजिक जागरण और सांस्कृतिक पुनःनिर्माण की धारा भी समाहित थी। जातिवाद, अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लिखी गई रचनाएँ भी राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा थीं क्योंकि वे समाज को एकता, समानता और प्रगति की ओर ले जाती थीं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरियाणा का साहित्य राष्ट्रीयता का जीवंत दस्तावेज है। इसकी कविताएँ, रागनियाँ और लोकगीत उस समय के जनमानस की आकांक्षाओं, संघर्षों और संकल्पों को प्रकट करते हैं। इस साहित्य ने न केवल हरियाणा, बल्कि पूरे भारत में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।[2]

मुख्य शब्दः हरियाणा साहित्य, राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम, लोकसाहित्य, लोकगीत, रागिनी, स्वतंत्रता संग्राम, ग्रामीण कवि, त्याग, बलिदान, शौर्य, विद्रोह, राष्ट्रीय चेतना, हरियाणवी भाषा, ब्रजभाषा, हिंदी, पंडित लखमीचंद, राव तुलाराम, सामाजिक जागरण।

लोकसाहित्य और लोकगीतों में राष्ट्रप्रेम

हरियाणा की सांस्कृतिक परंपरा में लोकसाहित्य और लोकगीतों का विशेष स्थान है। लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति के रूप में यह साहित्य सदियों से ग्रामीण समाज की आत्मा रहा है। जब भारत विदेशी दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, उस समय हरियाणा के लोकगीत और लोककथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं थे,[3] बल्कि उनमें राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता की आकांक्षा का स्वर गूँजता था। यही कारण है कि लोकसाहित्य राष्ट्रीय चेतना को जगाने और जनता को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम बना। लोकगीतों और रागनियों में किसानों, मजदूरों और ग्रामीण जनता के जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है। इन गीतों में खेत–खलिहान की मेहनत, फसलों की खुशबू और ग्राम्य जीवन की सादगी के साथ–साथ पराधीनता के दुख और स्वाधीनता की चाह भी प्रकट होती थी। जब विदेशी शासन का अत्याचार बढ़ता था, तब लोककवियों की रचनाओं में प्रतिरोध और विद्रोह की भावना मुखर हो जाती थी। इन गीतों को गाकर गाँव–गाँव में संदेश पहुँचाया जाता और इस प्रकार राष्ट्रप्रेम की धारा सीधे जनमानस तक पहुँचती थी। लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी भाषा थी। सरल, सहज और ग्रामीण बोली में गाए जाने के कारण

[2] विनोद राठी, (2017) *हरियाणा के कवि और स्वतंत्रता चेतना,* हिसार लोक साहित्य केंद्र, पृष्ठ 62–80
[3] नीलम सैनी, (2020) *हरियाणा के लोककवियों का सामाजिक योगदान,* रोहतक हिंदी अध्ययन संस्थान, पृष्ठ 50–66

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

ये गीत हर वर्ग के लोगों तक पहुँचते और उन्हें प्रभावित करते।[4] हरियाणवी लोकगीतों में वीररस और देशभक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। जब गायक रागिनी के माध्यम से स्वतंत्रता, बलिदान और शौर्य की गाथाएँ प्रस्तुत करते थे, तो श्रोताओं के भीतर भी देशप्रेम की ज्वाला प्रज्वलित हो उठती थी। हरियाणा के लोकसाहित्य में ऐसे अनेक गीत और कहावतें मिलती हैं, जिनमें अंग्रेजी शासन के अन्याय का विरोध और स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना निहित है। इन गीतों ने किसानों और ग्रामीण समाज को जाग्रत करने में विशेष योगदान दिया। यही कारण है कि स्वतंत्रता संग्राम के समय हरियाणा की धरती से असंख्य वीर सेनानी और क्रांतिकारी निकले। उनके पराक्रम की गाथाएँ भी बाद में लोकगीतों का हिस्सा बन गईं, जिससे समाज में राष्ट्रप्रेम और बलिदान की परंपरा और सुदृढ़ हुई। हरियाणा के लोकसाहित्य और लोकगीतों में राष्ट्रप्रेम केवल एक विषय नहीं था, बल्कि यह उनकी आत्मा था। इन गीतों ने जनमानस में स्वतंत्रता की आकांक्षा को जीवंत रखा और राष्ट्रीय चेतना को गहराई तक पहुँचाया। वास्तव में, हरियाणा का लोकसाहित्य स्वतंत्रता संग्राम की अमर गाथाओं का जीवंत दस्तावेज है।

ग्रामीण कवियों व कथाकारों द्वारा त्याग और बलिदान का संदेश

हरियाणा का ग्रामीण समाज अपनी सादगी, परिश्रम और संघर्षशीलता के लिए जाना जाता है। यही विशेषता यहाँ के कवियों और कथाकारों की रचनाओं में भी परिलक्षित होती है।[5] ग्रामीण कवि और कथाकार जनजीवन से सीधे जुड़े होते थे, इसलिए उनकी रचनाएँ भी ग्रामीण जनता की भावनाओं और आकांक्षाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती थीं। जब देश विदेशी शासन की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, तब इन कवियों और कथाकारों ने अपने साहित्य को राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान का माध्यम बनाया। ग्रामीण कवियों की रचनाओं में स्वतंत्रता की ललक और पराधीनता की पीड़ा स्पष्ट दिखाई देती थी। वे जनता को यह संदेश देते थे कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत सुख–सुविधाओं का त्याग करना अनिवार्य है। उन्होंने त्याग और बलिदान को जीवन का सर्वोच्च आदर्श माना। उनकी कविताएँ और गीत साधारण किसान, मजदूर और युवा को यह प्रेरणा देते थे कि स्वतंत्रता की राह कठिन अवश्य है, लेकिन उसका फल अमूल्य है। इन कवियों ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों और वीर योद्धाओं के बलिदानों को महिमामंडित किया। वे गीतों और कथाओं में बताते थे कि कैसे वीरों ने हँसते–हँसते अपने प्राणों की आहुति दी और राष्ट्र की स्वतंत्रता

[4] मुकुल बिश्नोई, (2018) *हरियाणा के साहित्यकार और स्वाधीनता की धारा,* दिल्ली साहित्य शोधालय, पृष्ठ 85–100

[5] अजय मलिक, (2021) *हरियाणा के लोककाव्य में स्वराज का स्वर,* नई दिल्ली आधुनिक हिंदी अकादमी, पृष्ठ 35–52

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के लिए संघर्ष किया। इस प्रकार, उनके साहित्य ने न केवल जनता को जाग्रत किया, बल्कि उन्हें बलिदान के लिए तैयार भी किया। ग्रामीण कथाकारों ने लोककथाओं और किस्सों के माध्यम से भी स्वतंत्रता और त्याग का संदेश दिया। उनकी कहानियों में वीरता, न्याय और धर्म की रक्षा के प्रसंग प्रमुखता से मिलते हैं। वे सरल भाषा और लोक शैली का प्रयोग करते थे, जिससे उनकी कथाएँ सीधे जनता के हृदय तक पहुँचती थीं। इन कथाओं ने समाज को यह विश्वास दिलाया कि अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष ही सच्चा धर्म है।[6] हरियाणा के अनेक ग्रामीण कवियों ने स्वांग और रागनियों के माध्यम से जनता को प्रेरित किया। ये लोकनाट्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे, बल्कि उनमें स्वतंत्रता और त्याग का संदेश छिपा होता था। गाँव–गाँव में आयोजित इन कार्यक्रमों ने ग्रामीण जनता के भीतर राष्ट्रप्रेम की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। संक्षेप में कहा जाए तो हरियाणा के ग्रामीण कवि और कथाकार त्याग और बलिदान की परंपरा के जीवंत वाहक थे। उनकी रचनाओं ने आमजन को यह सिखाया कि स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं, बल्कि बलिदान और संघर्ष से प्राप्त होने वाली धरोहर है। वास्तव में, उनके साहित्य ने ही हरियाणा की जनता को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए तैयार किया।[7]

हरियाणवी, ब्रज व हिंदी भाषा का राष्ट्रीय चेतना में योगदान

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा का सबसे सशक्त पहलू इसकी भाषाई विविधता है। यहाँ हरियाणवी बोली के साथ–साथ ब्रज और हिंदी भाषाओं का भी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विकास हुआ। इन भाषाओं ने केवल अभिव्यक्ति का साधन होने से कहीं अधिक भूमिका निभाई–उन्होंने जनमानस में राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया। भाषा वह माध्यम है, जो सीधे लोगों के हृदय और मस्तिष्क तक पहुँचती है। हरियाणा के कवियों और लेखकों ने इस सत्य को भली–भाँति समझा और अपने साहित्य में स्थानीय बोली तथा प्रचलित भाषाओं का प्रयोग कर राष्ट्रीय चेतना को व्यापक आधार प्रदान किया।[8]

हरियाणवी भाषा का योगदान – हरियाणवी लोकभाषा सीधे–सीधे ग्रामीण जनता की भाषा थी। इसकी सादगी, सहजता और बोलचाल का स्वरूप ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी। जब कवि और लोकगीतकार हरियाणवी में रचनाएँ प्रस्तुत करते थे, तो वह सामान्य किसान, मजदूर और महिला के हृदय को तुरंत छू लेती थी। यही कारण है कि लख्मीचंद जैसे कवि की रागनियाँ आज भी गाँव–गाँव में गाई जाती हैं और उनमें निहित देशभक्ति और सामाजिक

[6] गीता राणा, (2019) *हरियाणा के गीतों में राष्ट्रीय एकता,* करनाल सांस्कृतिक प्रकाशन, पृष्ठ 42–60
[7] मनीषा मलिक, (2016) *हरियाणा के लोकगीतों में वीर रस,* नई दिल्ली साहित्य भवन, पृष्ठ 30–45
[8] बालकृष्ण अत्री, (2007) *राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य,* दिल्ली प्रकाशन विभाग, पृष्ठ 90–105

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चेतना का संदेश लोगों को प्रेरित करता है। हरियाणवी ने राष्ट्रीय चेतना को जनभाषा का आधार दिया और उसे गहराई तक पहुँचाया।

ब्रजभाषा का योगदान – हरियाणा के कई हिस्सों, विशेषकर पलवल, फरीदाबाद और मेवात क्षेत्र में ब्रजभाषा का प्रभाव रहा। ब्रजभाषा का साहित्य सदियों से भक्ति, शौर्य और प्रेम की परंपरा का वाहक रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय ब्रजभाषा की कविताओं और गीतों में राष्ट्रप्रेम और बलिदान का स्वर मुखर हुआ। ब्रजभाषा की लयात्मकता और भावप्रवणता ने ग्रामीण समाज को आंदोलित किया और उनमें स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की भावना जाग्रत की।[9]

हिंदी भाषा का योगदान – हिंदी राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में हरियाणा में भी व्यापक रूप से प्रयुक्त हुई। हिंदी ने हरियाणा के साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य की मुख्यधारा से जोड़ा। अनेक साहित्यकारों ने हिंदी में कविताएँ, कहानियाँ और लेख लिखकर न केवल स्थानीय समाज बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी राष्ट्रप्रेम का संदेश पहुँचाया। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हिंदी लेखों और कविताओं ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता को नई चेतना और ऊर्जा दी।[10] इस प्रकार, हरियाणवी, ब्रज और हिंदी तीनों भाषाओं ने अपने–अपने स्तर पर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में अमूल्य योगदान दिया। हरियाणवी ने स्थानीय जनता को जोड़ा, ब्रज ने सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार दिया, और हिंदी ने क्षेत्रीय चेतना को राष्ट्रीय धारा में मिलाने का कार्य किया। इन भाषाओं के माध्यम से साहित्यकारों की रचनाएँ केवल क्षेत्र तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने पूरे राष्ट्र को प्रभावित किया। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरियाणा की भाषाई परंपरा ने राष्ट्रीय चेतना के विकास को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया। हरियाणवी, ब्रज और हिंदी ने मिलकर स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रनिर्माण में साहित्य को एक सशक्त हथियार बनाया।

स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा के साहित्यकार

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण का भी परिणाम था, जिसमें हरियाणा के साहित्यकारों ने अपनी अमूल्य भूमिका निभाई। इस प्रदेश के कवि और लेखक स्वतंत्रता आंदोलन के केवल दर्शक नहीं थे, बल्कि वे उसकी आत्मा के प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में अंग्रेजी शासन के अन्याय और दमनकारी नीतियों के विरुद्ध विद्रोह का स्वर मुखर किया तथा जनता को शौर्य, त्याग

[9] वही, पृष्ठ 61–80

[10] ओमप्रकाश शर्मा, (2010) *हरियाणा का साहित्यिक इतिहास,* चंडीगढ़ हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ 96–115

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

और बलिदान की राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी।[11] पं. लख्मीचंद जैसे कवि अपनी रागनियों और स्वांगों के माध्यम से ग्रामीण समाज को जागृत करते रहे और उन्हें यह समझाते रहे कि पराधीनता से मुक्ति केवल बलिदान और संघर्ष से ही संभव है। इसी प्रकार 1857 की क्रांति के वीर सेनानी राव तुलाराम की शौर्यगाथाएँ लोकगीतों और रागनियों में गाई जाती थीं, जिसने हरियाणा के ग्रामीण समाज में राष्ट्रप्रेम की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। झज्जर, रोहतक और रेवाड़ी क्षेत्रों के अनेक कवियों ने भी वीररस प्रधान कविताओं और गीतों की रचना की, जिनमें शहीदों और योद्धाओं की गाथाएँ गाई जातीं और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष का संदेश दिया जाता। इन कवियों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे सरल भाषा और लोकशैली का प्रयोग करते थे, जिससे उनकी रचनाएँ सीधे–सीधे जनता के दिलों तक पहुँचतीं। चौपालों, मेलों और लोकनाट्यों में गाए जाने वाले उनके गीत और कवित्त ग्रामीण समाज को आंदोलन से जोड़ते और उन्हें स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने की प्रेरणा देते। इस प्रकार हरियाणा के साहित्यकार स्वतंत्रता संग्राम की चेतना को जीवित रखने वाले सांस्कृतिक सेनानी थे, जिनकी लेखनी ने राष्ट्रप्रेम की धारा को प्रखर बनाया और स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।[12]

कवि और लेखकों का स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव

हरियाणा के कवि और लेखक स्वतंत्रता आंदोलन के केवल दर्शक मात्र नहीं थे, बल्कि वे उसके सक्रिय सहभागी और प्रेरणास्रोत भी रहे। उन्होंने अपने साहित्य को सामाजिक और राष्ट्रीय उद्देश्यों से जोड़कर उसे स्वतंत्रता संग्राम का एक सशक्त उपकरण बना दिया। जिस समय जनता अशिक्षा और दासता के अंधकार में डूबी हुई थी, उस समय कवियों और लेखकों ने अपने गीतों, कविताओं और लेखन के माध्यम से जागरण की मशाल जलाई। हरियाणा के साहित्यकारों ने अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों के खिलाफ जनता की पीड़ा को स्वर दिया। उनके गीतों में पराधीनता का दुःख, स्वतंत्रता की आकांक्षा और विद्रोह का साहस स्पष्ट झलकता है। जब प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक सभाएँ या आंदोलन आयोजित करना कठिन होता था, तब कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से चौपालों, मेलों और लोकमंचों पर स्वतंत्रता का संदेश प्रसारित करते थे। इस प्रकार साहित्य ने आंदोलन की गुप्त और सार्वजनिक दोनों ही गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[13] कवियों और लेखकों का स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव केवल लेखनी तक सीमित नहीं रहा। कई साहित्यकार स्वयं स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से सम्मिलित हुए। कुछ ने कारावास भुगता, तो कुछ ने अपने

[11] वही, पृष्ठ 156–180
[12] वही, पृष्ठ 119–140
[13] वही, पृष्ठ 51–68

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

प्राणों का बलिदान दिया। उनके लेखन और कार्य दोनों ने ही जनता के बीच विश्वास और साहस का संचार किया। यही कारण है कि उनकी कविताएँ और गीत केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं थे, बल्कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के घोषणापत्र और प्रेरणा–पत्र की तरह कार्य करते थे। हरियाणा के लोककवियों ने स्वांग, रागनियों और लोकगीतों के माध्यम से किसानों, मजदूरों और युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। उनका सीधा संवाद ग्रामीण समाज से था और इसीलिए उनका संदेश जनता के दिलों में गहराई तक उतरता था। साहित्यकारों का यह जुड़ाव इस तथ्य को प्रमाणित करता है[14] कि स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक नेताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि यह कवियों, लेखकों और कलाकारों के सामूहिक प्रयासों से व्यापक जन आंदोलन बन पाया। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरियाणा के कवि और लेखकों ने स्वतंत्रता आंदोलन से अपने संबंध को केवल भावनात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागिता से भी प्रमाणित किया। उनकी लेखनी और कर्म दोनों ने स्वतंत्रता संग्राम की लौ को प्रज्वलित रखा और राष्ट्रीय चेतना को बल प्रदान किया।

उनके लेखन में विद्रोह, शौर्य और बलिदान की अभिव्यक्ति

हरियाणा के साहित्यकारों और कवियों के लेखन में विद्रोह, शौर्य और बलिदान की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। जब अंग्रेजी शासन ने भारतीय जनता पर दमन और शोषण की नीतियाँ थोपीं, तब हरियाणा के कवियों ने अपनी रचनाओं में इस अन्याय के प्रति तीखा विरोध दर्ज कराया। उनके लेखन में केवल भावनात्मक वेदना ही नहीं, बल्कि प्रतिरोध और विद्रोह की आग भी प्रकट होती थी। ये रचनाएँ जनता के लिए प्रेरणास्रोत बन गईं और उन्होंने आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की।[15]

विद्रोह की अभिव्यक्ति – कवियों ने अपनी रचनाओं में अंग्रेजी सत्ता के दमनकारी शासन की आलोचना की और जनमानस में असंतोष की भावना को जाग्रत किया। उनकी कविताएँ और गीत जनता को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का आह्वान करते थे। स्वांग और रागनियों के माध्यम से वे बताते थे कि पराधीनता असहनीय है और उसे तोड़ना ही सच्चा धर्म है। इस प्रकार उनके साहित्य में विद्रोह की भावना आंदोलन का घोष बन गई।

शौर्य की अभिव्यक्ति – हरियाणा के साहित्यकारों ने वीररस प्रधान कविताओं और गीतों की रचना की, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं और शहीदों के पराक्रम का वर्णन किया गया। इन रचनाओं में रणभूमि के शौर्य, साहस और अदम्य आत्मबल की झलक मिलती है। कवि

[14] वही, पृष्ठ 35–48

[15] शशि कांत, (2011) *स्वतंत्रता संग्राम और हरियाणा की लोकशैली,* पानीपत संस्कार प्रकाशन, पृष्ठ 86–100

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वीरों के शौर्य का गुणगान करके जनता को यह विश्वास दिलाते थे कि पराधीनता के बंधन तोड़े जा सकते हैं और स्वतंत्रता संघर्ष संभव है। उनकी कविताओं ने युवाओं को संघर्ष और बलिदान के लिए उत्साहित किया।[16]

बलिदान की अभिव्यक्ति – साहित्यकारों की रचनाओं में बलिदान का स्वर भी गूँजता था। उन्होंने स्वतंत्रता के लिए प्राणों की आहुति देने वाले वीरों को अमरता प्रदान की। कविताओं और गीतों में शहीदों के बलिदान का महिमामंडन कर उन्हें समाज के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया। इससे लोगों में यह विश्वास दृढ़ हुआ कि स्वतंत्रता की प्राप्ति केवल बलिदान से ही संभव है।

हरियाणा के साहित्य में इस प्रकार विद्रोह, शौर्य और बलिदान की त्रिवेणी बहती दिखाई देती है। लोकगीतों और रागनियों ने न केवल अंग्रेजी शासन का विरोध किया, बल्कि जनता के भीतर यह जज्बा भी भरा कि वे त्याग और बलिदान के मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। यही कारण है कि इन रचनाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को जीवंत बनाए रखा और राष्ट्रीय चेतना को प्रखर रूप प्रदान किया। हरियाणा के कवियों और लेखकों का साहित्य केवल साहित्यिक सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि वह विद्रोह का उद्घोष, शौर्य का गायन और बलिदान की प्रेरणा का घोषणापत्र था। उनकी लेखनी ने जनता के हृदय में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित की और उन्हें संघर्ष की राह पर अग्रसर किया।[17]

प्रमुख साहित्यकार एवं उदाहरण

हरियाणा के स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यकारों और कवियों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को जन–जन तक पहुँचाया और ग्रामीण समाज को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। इनमें सबसे प्रमुख नाम पंडित लख्मीचंद का है, जिन्हें "सूर्यकवि" और "हरियाणा का शेक्सपियर" कहा जाता है। उनकी रागनियाँ और स्वांग केवल मनोरंजन के साधन नहीं थे, बल्कि वे स्वतंत्रता संग्राम के घोषणापत्र की तरह कार्य करते थे। लख्मीचंद की रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, त्याग और बलिदान की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता को बताते थे कि स्वतंत्रता का मार्ग कठिन अवश्य है, किंतु त्याग और संघर्ष से ही इसे प्राप्त किया जा सकता है। उनकी रागनियाँ चौपालों, मेलों और लोकमंचों पर गाई जाती थीं, जिससे ग्रामीण समाज के बीच

[16] विनोद राठी, (2017) *हरियाणा के कवि और स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना,* हिसार लोक साहित्य केंद्र, पृष्ठ 81–98

[17] नीलम सैनी, (2020) *लोककवियों के गीतों में स्वतंत्रता संदेश,* रोहतक हिंदी अध्ययन संस्थान, पृष्ठ 67–82

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्वतंत्रता की चेतना का विस्तार हुआ।[18] इसी क्रम में राव तुलाराम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया। राव तुलाराम का शौर्य और त्याग लोककवियों की रचनाओं का स्थायी विषय बन गया। उनकी वीरता की गाथाएँ लोकगीतों और रागनियों में गाई जाती रहीं, जिसने हरियाणा की जनता के हृदय में विद्रोह और बलिदान की ज्वाला प्रज्वलित की। राव तुलाराम की स्मृति हरियाणा के ग्रामीण समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी, और उनके बलिदान ने यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता केवल साहस और आत्मबल से ही प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त झज्जर, रोहतक और रेवाड़ी क्षेत्र के अनेक ग्रामीण कवियों और लोकगीतकारों ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन क्षेत्रों के कवियों ने वीररस प्रधान गीतों और कवित्तों की रचना की, जिनमें शौर्य और बलिदान का स्वर गूँजता था। वे अपने गीतों में शहीदों की गाथाएँ सुनाते और जनता को पराधीनता से मुक्ति के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देते। इन कवियों की रचनाएँ अधिकतर मौखिक परंपरा में प्रचलित थीं, किंतु उनका प्रभाव इतना व्यापक था कि उन्होंने सामान्य किसान, मजदूर और महिला तक को आंदोलन से जोड़ दिया। इन लोकगीतों और कवित्तों की शक्ति यह थी कि वे साक्षरता के बंधन से मुक्त होकर सीधे–सीधे जनमानस तक पहुँचते थे और ग्रामीण समाज में स्वतंत्रता की चेतना जागृत करते थे। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि हरियाणा के साहित्यकारों और कवियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी रचनाओं के माध्यम से अभूतपूर्व योगदान दिया। चाहे वह पं. लख्मीचंद की रागनियाँ हों, राव तुलाराम की वीरगाथाएँ हों या झज्जर, रोहतक और रेवाड़ी क्षेत्र के कवियों की मौखिक परंपराएँ–इन सभी ने मिलकर जनता के भीतर राष्ट्रप्रेम, विद्रोह और बलिदान की भावना को प्रखर किया। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं थीं, बल्कि वे स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना का प्रतीक थीं, जिन्होंने हरियाणा को राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से जोड़ने में निर्णायक भूमिका निभाई।[19]

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हरियाणा का साहित्य राष्ट्रीय भावना और देशप्रेम का सशक्त प्रतीक है। यहाँ के लोकसाहित्य, लोकगीत, रागिनियों, कविताओं और लोककथाओं में स्वतंत्रता, त्याग, बलिदान, शौर्य और विद्रोह की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। हरियाणा के कवियों और लोकगीतकारों ने अपने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं बनाया,

[18] मुकुल बिश्नोई, (2018) *स्वतंत्रता संग्राम और हरियाणा के साहित्यकार,* दिल्ली साहित्य शोधालय, पृष्ठ 101–118

[19] राजेश कुमार, (2011) *हरियाणा के कवियों में राष्ट्रीय चेतना,* दिल्ली लोक साहित्य प्रकाशन, पृष्ठ 25–42

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

बल्कि उसे सामाजिक जागरण और राष्ट्रीय चेतना फैलाने का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के समय जब देश विदेशी शासन के अत्याचारों से पीड़ित था, तब हरियाणा के लोकगीतों और रागिनियों ने ग्रामीण जनता में साहस और आत्मबल उत्पन्न किया। सरल हरियाणवी, ब्रज और हिंदी भाषा के प्रयोग ने साहित्य को आम जनता तक पहुँचाया। पंडित लखमीचंद जैसे लोककवियों ने अपनी रागिनियों द्वारा समाज में देशप्रेम, त्याग और संघर्ष की भावना जगाई। राव तुलाराम जैसे वीरों की गाथाओं ने भी हरियाणा के जनमानस को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार हरियाणा का साहित्य राष्ट्रीयता का जीवंत दस्तावेज है। यह साहित्य समाज को एकता, समानता, संघर्ष और कर्तव्य–बोध की प्रेरणा देता है। लोकसाहित्य ने न केवल हरियाणा, बल्कि पूरे भारत में राष्ट्रीय चेतना के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।